पाठ 3.3 : जामुन का पेड़

कृश्न चंदर

__कृश्न चंदर__ का जन्म वर्तमान पाकिस्तान में स्थित वजीराबाद, गुजराँवाला में 23 नवंबर सन् 1914 ई. को हुआ। उर्दू और हिंदी के मशहूर कहानीकार के रूप में उनके कई उपन्यास और कहानी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। उनके प्रसिद्ध उपन्यास __एक गधे की आत्मकथा__ का सोलह से ज्यादा भारतीय तथा विदेशी भाषाओं में भी अनुवाद हो चुका है। लघुकथा __अन्नदाता__ पर ख़्वाजा अहमद अब्बास ने __'धरती के लाल'__ नाम से फिल्म भी बनाई है। इनके द्वारा लिखी गई कई कहानियों पर फिल्मों का निर्माण भी हुआ है। 1969 में उन्हें पद्मभूषण से भी सम्मानित किया गया। 8 मार्च सन् 1977 ई. को उनका देहावसान हो गया। संकलित कहानी उनके कहानी संग्रह __फूल और पत्थर__ से ली गई है।

रात को बड़े ज़ोर का झक्कड़ चला। सेक्रटेरियेट के लॉन में जामुन का एक दरख़्त गिर पड़ा। सवेरे जब माली ने देखा तो उसे मालूम हुआ कि पेड़ के नीचे एक आदमी दबा पड़ा है।

माली दौड़ा–दौड़ा चपरासी के पास गया, चपरासी दौड़ा–दौड़ा क्लर्क के पास गया, क्लर्क दौड़ा–दौड़ा सुपरिटेंडेंट के पास गया। सुपरिटेंडेंट दौड़ा–दौड़ा बाहर लॉन में आया। मिनटों में गिरे हुए पेड़ के नीचे दबे हुए आदमी के चारों ओर भीड़ इकट्ठी हो गई।

''बेचारा, जामुन का पेड़! कितना फलदार था।'' एक क्लर्क बोला।

''और इसकी जामुनें कितनी रसीली होती थीं,'' दूसरा क्लर्क याद करते हुए बोला ।

''मैं फलों के मौसम में झोली भरकर ले जाता था। मेरे बच्चे इसकी जामुनें कितनी खुशी से खाते थे!'' तीसरा क्लर्क लगभग रुआँसा होकर बोला।

''मगर यह आदमी?'' माली ने दबे हुए आदमी की तरफ़ इशारा किया।

''हाँ, यह आदमी!'' सुपरिटेंडेंट सोच में पड़ गया।

''पता नहीं ज़िंदा है कि मर गया?'' एक चपरासी ने पूछा।

''मर गया होगा, इतना भारी पेड़ जिसकी पीठ पर गिरे, वह बच कैसे सकता है ?'' दूसरा चपरासी बोला।

''नहीं मैं ज़िंदा हूँ।'' दबे हुए आदमी ने बड़ी मुश्किल से कराहते हुए कहा।

''ज़िंदा है।'' एक क्लर्क ने आश्चर्य से कहा।

''दरख़्त को हटाकर इसे जल्दी से निकाल लेना चाहिए,'' माली ने सुझाव दिया।

''मुश्किल मालूम होता है।'' एक कामचोर और मोटा चपरासी बोला, ''पेड़ का तना बहुत भारी और वज़नी है।''

''मुश्किल क्या है,'' माली बोला, ''अगर सुपरिटेंडेंट साहब हुक्म दें, तो पन्द्रह–बीस माली, चपरासी और क्लर्क लगाकर पेड़ के नीचे से दबे हुए आदमी को निकाला जा सकता है।''

''माली ठीक कहता है'', बहुत से क्लर्क एक साथ बोल पड़े, ''लगाओ ज़ोर हम तैयार हैं।''

एकदम बहुत से लोग पेड़ को उठाने को तैयार हो गए।

''ठहरो!'' सुपरिटेंडेंट बोला, ''मैं अंडर सेक्रेटरी से पूछ लूँ।''

सुपरिटेंडेंट अंडर सेक्रेटरी के पास गया। अंडर सेक्रेटरी डिप्टी सेक्रेटरी के पास गया। डिप्टी सेक्रेटरी ज्वाइंट सेक्रेटरी के पास गया। ज्वाइंट सेक्रेटरी चीफ़ सेक्रेटरी के पास गया। चीफ़ सेक्रेटरी मिनिस्टर के पास गया। मिनिस्टर ने चीफ़ सेक्रेटरी से कुछ कहा। चीफ़ सेक्रेटरी ने ज्वाइंट सेक्रेटरी से कुछ कहा। ज्वाइंट सेक्रेटरी ने डिप्टी सेक्रेटरी से कहा, डिप्टी सेक्रेटरी ने अंडर सेक्रेटरी से कहा। फ़ाइल चलती रही– इसी में आधा दिन बीत गया।

दोपहर के खाने पर दबे हुए आदमी के चारों ओर बहुत भीड़ हो गई थी। लोग तरह–तरह की बातें कर रहे थे। कुछ मनचले क्लर्कों ने समस्या को खुद ही सुलझाना चाहा। वे हुकूमत के फ़ैसले का इंतजार किए बिना पेड़ को अपने आप ही हटा देने का निश्चय कर रहे थे कि इतने में सुपरिटेंडेंट फ़ाइल लिए भागा–भागा आया। बोला :

''हम लोग खुद इस पेड़ को यहाँ से नहीं हटा सकते। हम लोग व्यापार विभाग से संबंधित हैं, और यह पेड़ की समस्या है, जो कृषि विभाग के अधीन है। मैं इस फ़ाइल को अर्जेंट मार्क करके कृषि विभाग में भेज रहा हूँ। वहाँ से उत्तर आते ही इस पेड़ को हटवा दिया जाएगा।''

दूसरे दिन कृषि विभाग से उत्तर आया कि पेड़ व्यापार विभाग के लॉन में गिरा है, इसलिए इस पेड़ को हटवाने की ज़िम्मेदारी व्यापार विभाग की है।

यह उत्तर पढ़ कर व्यापार विभाग को गुस्सा आ गया। उसने फ़ौरन लिखा कि पेड़ों को हटवाने या न हटवाने की ज़िम्मेदारी कृषि विभाग पर लागू होती है, व्यापार विभाग का इससे कोई संबंध नहीं।

दूसरे दिन भी फ़ाइल चलती रही। शाम को जवाब आया। हम मामले को हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट के हवाले कर रहे हैं, क्योंकि यह एक फलदार पेड़ का मामला है और एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट केवल अनाज और खेतीबाड़ी के मामलों में फ़ैसला करने का हकदार है। जामुन का पेड़ एक फलदार पेड़ है, इसलिए यह पेड़ हार्टीकल्चर डिपार्टमेंट के अंतर्गत आता है।

रात को माली ने दबे हुए आदमी को दाल–भात खिलाया। यद्यपि लॉन के चारों तरफ़ पुलिस का पहरा था कि कहीं लोग कानून को अपने हाथ में लेकर पेड़ को खुद ही हटवाने की कोशिश न करें। मगर एक पुलिस कॉन्स्टेबल को दया आ गई और उसने माली को दबे हुए आदमी को खाना खिलाने की इजाजत दे दी।

माली ने दबे हुए आदमी से कहा, ''तुम्हारी फ़ाइल चल रही है। आशा है कल तक फ़ैसला हो जाएगा।''

दबा हुआ आदमी कुछ नहीं बोला।

माली ने पेड़ के तने को ध्यान से देखकर कहा, ''अच्छा हुआ कि तना तुम्हारे कूल्हे पर गिरा, अगर कमर पर गिरता तो रीढ़ की हड्डी टूट जाती।''

दबा हुआ आदमी फिर भी कुछ नहीं बोला।

माली ने फिर कहा, ''तुम्हारा यहाँ कोई वारिस है तो मुझे उसका अता–पता बताओ, मैं उन्हें खबर देने की कोशिश करूँगा।''

''मैं लावारिस हूँ'' दबे हुए आदमी ने बड़ी मुश्किल से कहा।

माली खेद करते हुए वहाँ से हट गया।

तीसरे दिन हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट का जवाब आ गया। बड़ा कड़ा जवाब था, और व्यंग्यपूर्ण।

हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट का सेक्रेटरी साहित्य प्रेमी आदमी जान पड़ता था। उसने लिखा था, ''आश्चर्य है, इस समय जब हम 'पेड़ लगाओ स्कीम' ऊँचे स्तर पर चला रहे हैं, हमारे देश में ऐसे सरकारी अफसर मौजूद हैं जो पेड़ों को काटने का सुझाव देते हैं, और वह भी एक फलदार पेड़ को, और वह भी जामुन के पेड़ को, जिसके फल जनता बड़े चाव से खाती है? हमारा विभाग किसी हालत में इस फलदार वृक्ष को काटने की इजाज़त नहीं दे सकता।''

''अब क्या किया जाए?'' इस पर एक मनचले ने कहा, ''अगर पेड़ काटा नहीं जा सकता तो इस आदमी को ही काटकर निकाल लिया जाए।''

''यह देखिए''– उस आदमी ने इशारे से बताया, ''अगर इस आदमी को बिल्कुल बीच में से अर्थात् धड़ से काटा जाए तो आधा आदमी इधर से निकल जाएगा और आधा उधर से बाहर आ जाएगा और पेड़ वहीं का वहीं रहेगा।''

''मगर इस तरह से तो मैं मर जाऊँगा।'' दबे हुए आदमी ने आपत्ति प्रकट की।

''यह भी ठीक कहता है'' एक क्लर्क बोला।

आदमी को काटने वाली युक्ति प्रस्तुत करने वाले ने भरपूर विरोध किया, ''आप जानते नहीं हैं? आजकल प्लास्टिक सर्जरी कितनी उन्नति कर चुकी है। मैं समझता हूँ– अगर इस आदमी को बीच में से काटकर निकाल लिया तो प्लास्टिक सर्जरी से धड़ के स्थान पर इस आदमी को फिर से जोड़ा जा सकता है।''

इस बार फ़ाइल को मेडिकल डिपार्टमेंट में भेजा गया। मेडिकल डिपार्टमेंट ने फ़ौरन एक्शन लिया, और जिस दिन फाइल उनके विभाग में पहुँची उसके दूसरे ही दिन उन्होंने अपने विभाग का सबसे योग्य प्लास्टिक सर्जन छानबीन के लिए भेज दिया। सर्जन ने दबे हुए आदमी को अच्छी तरह टटोलकर, उसका स्वास्थ्य देखकर खून का दबाव देखा, नाड़ी की गति को परखा, दिल और फेफड़ों की जाँच करके रिपोर्ट भेज दी कि इस आदमी का प्लास्टिक ऑपरेशन तो हो सकता है और ऑपरेशन सफल भी होगा, मगर आदमी मर जाएगा।

इसलिए यह फ़ैसला भी रद्द कर दिया गया।

रात को माली ने दबे हुए आदमी के मुँह में खिचड़ी डालते हुए उसे बताया कि अब मामला ऊपर चला गया है, सुना है कि कल सेक्रेटेरिएट के सारे सेक्रेटरियों की मीटिंग होगी। उसमें तुम्हारा केस भी रखा जाएगा। उम्मीद है, सब काम ठीक हो जाएगा।

दबा हुआ आदमी एक आह भरकर धीरे से बोला :

''ये तो माना कि तग़ाफुल न करोगे,
लेकिन ख़ाक हो जाएँगे हम तुमको खबर होने तक।''

माली ने अचंभे से मुँह में उँगली दबा ली, और चकित भाव से बोला, ''क्या तुम शायर हो?''

दबे हुए आदमी ने धीरे से सिर हिला दिया।

दूसरे दिन माली ने चपरासी को बताया, चपरासी ने क्लर्क को, क्लर्क ने हेड–क्लर्क को, थोड़ी ही देर में सेक्रिटेरिएट में यह अफ़वाह फैल गई कि दबा हुआ आदमी शायर है बस, फिर क्या था, लोगों का झुंड का झुंड शायर को देखने के लिए उमड़ पड़ा। इसकी चर्चा शहर में भी फैल गई और शाम तक गली–गली से शायर जमा होने शुरू हो गए। सेक्रिटेरिएट का लॉन भाँति–भाँति के शायरों से भर गया और दबे हुए आदमी के चारों ओर मुशायरे का सा वातावरण उत्पन्न हो गया। सेक्रेटेरिएट के कई क्लर्क और अंडर सेक्रेटरी तक, जिन्हें साहित्य और कविता से लगाव था, रुक गए। कुछ शायर दबे हुए आदमी को अपनी ग़ज़लें और नज़्में सुनाने लगे। कई क्लर्क उसको अपनी ग़ज़लों को दुरस्त करने पर मजबूर करने लगे।

जब यह पता चला कि दबा हुआ आदमी एक शायर है, तो सेक्रेटेरिएट की सब–कमेटी ने फैसला किया कि चूँकि दबा हुआ आदमी एक शायर है, इसलिए इस फ़ाइल का संबंध न एग्रीकल्चर डिपार्टमेंट से है, न हॉर्टीकल्चर डिपार्टमेंट से, बल्कि सिर्फ कल्चरल डिपार्टमेंट से है। कल्चरल डिपार्टमेंट से अनुरोध किया गया कि जल्द से जल्द मामले का फ़ैसला करके अभागे शायर को इस फलदार पेड़ से छुटकारा दिलाया जाए।

फ़ाइल कल्चरल डिपार्टमेंट के अनेक विभागों से गुज़रती हुई साहित्य अकादमी के सेक्रेटरी के पास पहुँची। बेचारा सेक्रेटरी उसी समय अपनी गाड़ी में सवार होकर सेक्रेटेरिएट पहुँचा और दबे हुए आदमी से इंटरव्यू लेने लगा।

''तुम शायर हो?'' उसने पूछा।

''जी हाँ !'' दबे आदमी ने जवाब दिया।

''क्या उपनाम रखते हो?''

''ओस!''

''ओस?'' सेक्रेटरी ज़ोर से चीखा, ''क्या तुम वही ''ओस'' हो जिसका कविता संग्रह ''ओस के फूल'' अभी हाल में प्रकाशित हुआ है?''

दबे हुए शायर ने इक़रार में सिर हलाया।

''क्या तुम हमारी अकादमी के मेंबर हो?'' सेक्रेटरी ने पूछा।

''नहीं।''

''आश्चर्य है,'' सेक्रेटरी ज़ोर से चीखा, ''इतना बड़ा शायर– 'ओस के फूल' का लेखक और हमारी अकादमी का मेंबर नहीं है। उफ़–उफ़, कैसी भूल हो गई हमसे, कितना बड़ा शायर और कैसी अँधेरी गुमनामी में दबा पड़ा है।''

''गुमनामी नहीं– एक दरख़्त के नीचे दबा पड़ा हूँ, कृपया मुझे इस पेड़ के नीचे से निकालिए।''

''अभी बंदोबस्त करता हूँ।'' सेक्रेटरी फौरन बोला और फौरन उसने अपने विभाग में रिपोर्ट की।

दूसरे दिन सेक्रेटरी भागा–भागा शायर के पास आया और बोला, ''मुबारक हो, मिठाई खिलाओ, हमारी सरकारी साहित्य अकादमी ने तुम्हें अपनी केंद्रीय शाखा का मेंबर चुन लिया है, यह लो चुनाव पत्र।''

''मगर मुझे इस पेड़ के नीचे से तो निकालो'', दबे हुए आदमी ने कराहकर कहा। उसकी साँस बड़ी

मुश्किल से चल रही थी और उसकी आँखों से मालूम होता था कि वह घोर पीड़ा और यातना में पड़ा है।

''यह हम नहीं कर सकते।'' सेक्रेटरी ने कहा, ''और जो हम कर सकते थे, वह हमने कर दिया। बल्कि हम यहाँ तक तो कर सकते हैं कि अगर तुम मर जाओ तो तुम्हारी बीवी को वज़ीफा दे सकते हैं, अगर तुम दरख्वास्त दो तो हम वह भी कर सकते हैं।''

''मैं अभी जीवित हूँ।'', शायर रुक–रुक कर बोला, ''मुझे ज़िंदा रखो।''

''मुसीबत यह है'', सरकारी साहित्य अकादमी का सेक्रेटरी हाथ मलते हुए बोला, ''हमारा विभाग सिर्फ कल्चर से संबंधित है। उसके लिए हमने फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट को लिख दिया और अर्जेंट लिखा है।

शाम को माली ने आकर दबे हुए आदमी को बताया, ''कल फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट के आदमी आकर इस पेड़ को काट देंगे और तुम्हारी जान बच जाएगी।''

माली बहुत खुश था। दबे हुए आदमी का स्वास्थ्य जबाव दे रहा था, मगर वह किसी न किसी तरह अपने जीवन के लिए लड़े जा रहा था। कल तक....... सवेरे तक....... किसी न किसी तरह उसे जीवित रहना है।

दूसरे दिन जब फ़ॉरेस्ट डिपार्टमेंट के आदमी आरी, कुल्हाड़ी लेकर पहुँचे तो उनको पेड़ काटने से रोक दिया गया। मालूम हुआ कि विदेश–विभाग से हुक़्म आया था कि इस पेड़ को न काटा जाए। कारण यह था कि इस पेड़ को दस साल पहले पिटोनिया राज्य के प्रधानमंत्री ने सेक्रेटेरिएट के लॉन में लगाया था। अब अगर यह पेड़ काटा गया तो इस बात का काफ़ी अंदेशा था कि पिटोनिया सरकार से हमारे संबंध सदा के लिए बिगड़ जाएँगे।''

''मगर एक आदमी की जान का सवाल है'', एक क्लर्क चिल्लाया।

''दूसरी ओर दो राज्यों के संबंधों का सवाल है'', दूसरे क्लर्क ने पहले क्लर्क को समझाया, ''और यह भी तो समझो कि पिटोनिया सरकार हमारे राज्य को कितनी सहायता देती है– क्या उनकी मित्रता की ख़ातिर एक आदमी के जीवन का भी बलिदान नहीं कर सकते?''

''शायर को मर जाना चाहिए?''

''निःसंदेह।''

अंडर सेक्रेटरी ने सुपरिंटेंडेंट को बताया, ''आज सवेरे प्रधानमंत्री दौरे से वापस आ गए हैं। आज चार बजे विदेश विभाग इस पेड़ की फ़ाइल उनके सामने पेश करेगा, जो वे फ़ैसला लेंगे वही सबको स्वीकार होगा।''

शाम के पाँच बजे स्वयं सुपरिटेंडेंट शायर की फ़ाइल लेकर उसके पास गया, ''सुनते हो?'', आते ही वह खुशी से फ़ाइल को हिलाते हुए चिल्लाया, ''प्रधानमंत्री ने इस पेड़ को काटने का हुक्म दे दिया है और इस घटना की सारी अंतर्राष्ट्रीय ज़िम्मेदारी अपने सर ले ली है कल यह पेड़ काट दिया जाएगा और तुम इस संकट से छुटकारा हासिल कर लोगे। सुनते हो, आज तुम्हारी फ़ाइल मुकम्मल हो गई।''

मगर शायर का हाथ ठंडा था। आँखों की पुतलियाँ निर्जीव थीं और चींटियों की एक लंबी पंक्ति उसके मुँह में जा रही थी......।

उसके जीवन की फ़ाइल मुकम्मल हो चुकी थी।

शब्दार्थ

झक्कड़ – आँधी; **दरख़्त** – पेड़; **हुकूमत** – शासन; **इजाज़त** – अनुमति; **लावारिस** – अनाथ; **तग़ाफ़ुल** – धोखा करना; **ख़ाक हो जाना** – राख हो जाना, नष्ट हो जाना; **ग़ुमनामी** – जिसकी कोई पहचान न हो; **दरख़्वास्त** – निवेदन, अर्जी; मुक़म्मल – पूर्ण, पूरा।

अभ्यास

पाठ से

1. जामुन के पेड़ के नीचे दबे आदमी को आधा दिन बीत जाने तक भी क्यों नहीं निकाला जा सका?
2. आदमी को पेड़ के नीचे से निकालने के लिए फ़ाइल किन–किन विभागों में घूमती रही?
3. कृषि विभाग ने पेड़ हटाने का मामला हॉर्टीकल्चर विभाग को सौंपने के पीछे क्या तर्क दिए?
4. पेड़ के नीचे दबे आदमी ने ग़ालिब का एक शे'र कहा। पाठ में खोजिए कि

    (क) वह शे'र क्या है?

    (ख) उसका क्या अर्थ है?

    (ग) उसने यह शे'र क्यों कहा?
5. ''उसके जीवन की फ़ाइल मुकम्मल हो चुकी थी।'' पंक्ति का क्या आशय है?
6. जामुन का पेड़ गिरने पर जब भीड़ इकट्ठी हुई तब क्लर्कों व माली की बातचीत में आप किस प्रकार का अंतर देखते हैं? उनकी बातचीत से उनके व्यक्तित्व के बारे में क्या पता चलता है?
7. प्रधानमंत्री ने इस घटना की सारी अंतर्राष्ट्रीय ज़िम्मेदारी अपने सर ले ली।'' इस पंक्ति में क्या व्यंग्य किया गया है?

पाठ से आगे

1. जामुन के पेड़ को हटाने की जिम्मेदारी सभी विभाग एक दूसरे पर डालते रहे और किसी को भी आदमी को बचाने की चिंता नहीं थी। यह स्थिति हमारे व्यवस्था की कार्यप्रणाली के किस चरित्र को उजागर करती है?
2. आपके घर के सामने यदि पेड़ गिर जाए तो उसे हटाने के लिए आप क्या–क्या करेंगे?
3. यदि आप माली की जगह होते तो ऊपर के फैसले का इंतज़ार करते या नहीं? यदि हाँ तो क्यों और नहीं तो क्यों?
4. यदि पेड़ हटाने की फाइल को पर्यावरण विभाग, जल विभाग व शिक्षा विभाग को भेजना पड़े, तो वे विभाग पेड़ न हटाने के क्या तर्क देंगे?
5. आपके विचार से कहानी में मूल समस्या क्या है, पेड़ को हटाना या आदमी को निकालना? तर्क सहित अपना जवाब दीजिए।

भाषा के बारे में

1. किसी भी भाषा में उसके संपर्क में आने वाली अन्य भाषाओं के शब्द सहज रूप से घुल–मिल जाते हैं। इस पाठ में ऐसे शब्दों का बहुतायत में प्रयोग हुआ है, जैसे– केस, क्लर्क, हुकूमत आदि। पाठ में ऐसे शब्दों को पहचानने का प्रयास करें जो आपको दूसरी भाषाओं के जान पड़ते हों। साथ ही यह भी लिखिए कि वे किस भाषा से लिए गए हैं?
2. इस कहानी में कई प्रशासनिक विभागों और पदानुक्रमों का जिक्र हुआ है, उन्हें छाँटकर उनके हिंदी नाम लिखिए।
3. किसी भी भाषा में संज्ञा के बहुवचन बनाने के अपने नियम होते हैं। हिंदी भाषा में किसी भी शब्द को बहुवचन में बदलने के भी कुछ नियम हैं। जैसे कि–

   (क) संज्ञा को कर्ता के स्थान पर बहुवचन में बदलने के नियम

   (ख) संज्ञा का संबोधन के रूप में उपयोग पर बहुवचन के नियम

   (ग) संज्ञा के अन्यत्र, जैसे कि विभक्ति के साथ प्रयोग में बहुवचन के नियम

   इसी तरह संज्ञा में लिंग और अंतिम ध्वनि भी उसे बहुवचन में परिवर्तित करने को प्रभावित करती है। इस आधार पर विभिन्न ध्वनियों से समाप्त होने वाले तथा विभिन्न लिंग वाले शब्दों की कल्पना कर उनके बहुवचन रूपों को लिखिए। इस आधार पर संज्ञा को बहुवचन में बदलने के नियम बताइए।

संज्ञा को बहुवचन में बदलने के आधार

वचन बदलने का आधार	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	लड़का	लड़के
विभक्ति के साथ	लड़के ने	लड़कों ने
संबोधन के साथ	ए लड़के!	ए लड़को!

योग्यता विस्तार

1. हरिशंकर परसाई द्वारा लिखित व्यंग्य ''भोलाराम का जीव'' में भी व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया गया है। इसे पुस्तकालय से या अपने शिक्षकों की मदद से पढ़िए एवं कक्षा में चर्चा कीजिए।

2. प्रोजेक्ट कार्य–

   पाठ में कई प्रशासनिक कार्यालयों के नामों का उल्लेख हुआ है। इसी तरह–

   (क) आपके आसपास कौन–कौन से प्रशासनिक कार्यालय हैं? इनकी सूची तैयार कीजिए।

   (ख) अपने द्वारा बताए गए कार्यालयों में से किन्हीं तीन कार्यालयों में कौन–कौन से पद हैं, उनके हिंदी व अंग्रेजी (दोनों भाषाओं) में नाम लिखिए। अपने इस प्रोजेक्ट कार्य को विद्यालय/कक्षा में प्रस्तुत कीजिए।

BSH5EE